Vol 4 Issue 4 May 2014

ISSN No : 2230-7850

# International Multidisciplinary Research Journal

# *Indian Streams Research Journal*

Executive Editor
Ashok Yakkaldevi

Editor-in-Chief
H.N.Jagtap

**Welcome to ISRJ**

**RNI MAHMUL/2011/38595** **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

## *International Advisory Board*

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest,Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

.....More

## *Editorial Board*

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

**Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India**
**Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net**

Indian Streams Research Journal
ISSN 2230-7850
Volume-4 | Issue-4 | May-2014
Available online at www.isrj.net

# *प्रसाद के नाटको के मूलतत्व*

*टी, श्रीनिवासुलु*

प्राचार्य, यस, वी, महाविद्यालय, अनंसपुरमु, आन्ध्रप्रदेश.

***सारांश*** **:-**प्रसाद के नाटकों में कला और विचारों का सूक्ष्म विकास होता गया है और उसकी रेखाएँ स्पष्ट दीख पडती है, लेकिन उनका नाटक –साहित्य जिन सामान्य मूल तत्वों और भाव–सामग्रियों को आधार–शिला बनाकर खड़ा हुआ है, उन्ही तत्वों और भाव सामग्रियों का विश्लेषण करना, इस लेख का उदेश्य है। समस्त नाटकों की भाव–भूमि तथा पृष्ठभूमि एक ही है। यद्यपि उनके प्रत्येक नाटक का उदेश्य एक–दूसरे से प्रायः भिन्न है तथापि उनके सारे नाटकों का सन्देश एक ही होता गया है। नाटककार प्रसाद का सामान्य परिचय अथवा उनके नाट्य साहित्य का सामान्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि हम उन विचार सूत्रों को पकडने का प्रयत्न करें, जो उनके समस्त नाटकों में पिरोये हुए हैं। तभी हम उनकी नाट्य चेतना का वास्तविक मूल्यांकन कर सकेंगे। प्रसाद की नाट्य चेतना में मूलभूत तत्व पाये जाते हैं।

**Key Words :-** राष्ट्रीय प्रेम , सांस्कृतिक चेतना , मानव प्रेम , सामाजिक प्रयोजन.

***प्रस्तावना :***

प्रसाद भारतीय संस्कृति और सभ्यता के पुजारी थे। उनका देश–प्रेम उनके नाटकों का मुख्य अंग है। प्रसाद जी का हृदय देश प्रेम से भरा हुआ था पर वह कर्मशील न होकर मानवीय ही अधिक थे। इसलिए देश–हितकर कार्यों में न हाथ बँटा सकने पर भी अपनी साहित्यिक रचनाओं ही से देश का जो उपकार कर सकते थे वही उन्होंने यथाशक्ति कर पाये। स्कन्दगुप्त और चन्द्रगुप्त में प्रसाद का राष्ट्रीय प्रेम अन्य नाटकों की अपेक्षा बहुत अधिक निखरा हुआ है। यद्यपि प्रसाद जी ने प्राचीन इतिहास को लेकर ही नाटक लिखे हैं, पर यह नहीं कहा जा सकता कि वे अपने वर्तमान को एकदम भूल गए हैं। कहना तो चाहिए कि वर्तमान भारत के सांस्कृतिक पतन की विभीषिका को देखकर ही वे प्रचीन की ओर गए। उन्होंने प्राचीन इतिहास को छेड़कर हमें दिखलाया कि हम भी किसी समय कुछ थे। इसी भारत रुपी दृढ़राष्ट्रदुर्ग से टकराकर तत्कालीन ज्ञात संसार के विजेताओं की प्रबल वाहिनियाँ छिन्न–भिन्न होकर उलटी लौट गई थी। यही देश था, जहाँ वेदव्यास, जरत्कारु, गौतम आदि से महात्मा, कालिदास से अमर कवि, चन्द्रगुप्त, स्कंदगुप्त जैसे यशस्वी वीर उत्पन्न हुए थे। उनके सभी नाटकों में देश–प्रेम ओत–प्रेत है।

प्रसाद के देश–प्रेम में वर्तमान की झाँकी तो है ही, इसके साथ ही उनके देश की प्राचीन संस्कृति–पूजा भी है। प्रसाद का देश–प्रेम नाटक के केवल गीतों तक ही सीमित नहीं है, उसकी नाट्य–कला पर इस देश–प्रेम की बहुत अधिक प्रभाव पड़ा है। भारतीय आदर्श स्थापित करने में से जितने सफल हुए हैं उतने हिन्दी–संसार में कोई अन्य नहीं हुआ। यद्यपि 'राज्यश्री' में प्रसाद का राष्ट्र–प्रेम उतना अधिक उभरा नहीं है तथापि चीनी सुएन च्याँग के मुँह से, महाराज हर्षवर्धन के त्याग पर, भारतीय गौरव और संस्कृति की प्रशंसा कर दी गई है। सुएनच्याँग कहता हैः 'यह देव–दुर्लभ दृश्य देख कर सम्राट! मुझे विश्वास हो गया कि यही अमिताभ की प्रसव–भूमि हो सकती है।[1] 'ध्रुवस्वामिनी' में भी नाटककार ने अपने देश–प्रेम के लिए कुछ अवसर निकाल ही लिए हैं। विदेशी आक्रमणकारी शकराज, जब विजित रामगुप्त से देश के स्थान पर गुप्तकाल की लक्ष्मी ध्रुवस्वामिनी की माँग करता है तो वीर चन्द्रगुप्त अपने प्राणों को खतरे में डालकर देश और ध्रुवस्वामिनी दोनों की रक्षा करता है। प्रसाद अपने प्यारे देश को कहीं भी भूले नहीं है।

प्रसाद ने नाट्य–साहित्य का दूसरा मुख्य तत्व उनका इतिहास–प्रेम है। उनके दो नाटकों – कामना और एक घूँट को छोड़कर उनके सभी नाटक ऐतिहासिक कथा के आश्रित हैं। डॉ.नगेन्द्र के शब्दों में ''प्रसाद जी प्राचीन भारतीय संस्कृति के सौन्दर्य पर मुग्ध थे। स्वभाव से चिंतनशील और कल्पना–प्रिय होने के कारण वे उसी युग में रहते थे। कोलाहल की अवनी तजकर जब वे भुलावे का आह्वान करते हुए विराम–स्थल की खोज करते होंगे, उस समय वह रंगीन अतीत उन्हें सचमुच बड़े वेग से आकर्षित करता होगा। इसलिए उनके नाटकों में पुनरुत्थान की प्रवृत्ति बड़ी सजग रहती है। 'कामना' का रुपक इसका मुख साक्षी है। वे विदेशी छाया से आच्छादित भारतीय जीवन को फिर उसी स्वर्ग की ओर प्रेरित करने की बात सोचा करते थे। उन्होंने देखा कि हमारा वर्तमान ही नही, भूत इतिहास भी विदेशी प्रभाव की छाया में कठिन हो गया है, अतः फिर से उसका सच्चा स्वरुप प्रदर्शित करने के लिए उन्होंने भारतीय ग्रन्थों के ही आधार पर ऐतिहासिक अन्वेषण किये।

प्रसाद साहित्यकार ही नहीं इतिहासकार भी थे। 'विशाख' नाटक की भूमिका में उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि उनके नाट्य–साहित्य का मूलाधार प्राचीन इतिहास की पट–भूमि क्यों है। अपने नाटकों को ऐतिहासिक स्वरुप देकर उन्होंने दो कार्य सिध्द किये हैं–प्रथम भारतीय संस्कृति का शुध्द रुप हमारे वर्तमान पाठकों के सामने उपस्थित किया; द्वितिय, आधुनिक समस्याओं का समाधान पाने के लिए भी ऐतिहासिक अध्ययन की आवश्यकता मानी गई। इनके अतिरिक्त प्रसाद ने ऐतिहासिक छान–बीन भी की है। अतीत की टूटी कड़ियों को एकत्र करने का जो कार्य प्रसाद जी ने किया है, वह सराहनीय है। यौवन की मस्ती में मस्त इस नाटककार ने अपनी कल्पना और भाव–गरिमा से इतिहास के रुखे पृष्ठों में जीवन डाल दिया है। वे अतीत के चिह्न वे हमारे सामने नाचने लगते हैं। उन्होंने अपने नाटकों में बहुत–से ऐसे ऐतिहासिक अंशों की छान–बीन की है, जिनके बारे में इतिहासकार मौन थे। उन्होंने ऐतिहासिक वातावरण की सृष्टि इतनी आकर्षक की है, कि प्राचीन भारत का स्थान, सभ्यत्या, रहन–सहन आदि हमारी आँखें के सामने चित्रित हो उठते हैं।

प्रसाद जी के 'राज्यश्री', 'ध्रुवस्वामिनी' आदि नाटकों में वस्तु–संकलन और वस्तु–संगठन का जितना सुन्दर और सफल निर्वाह हुआ है उतना अन्यत्र नहीं। प्रसाद के प्रत्येक नाटक की आधार–शिला प्राचीन इनिहास है। तत्कालीन इतिहास को समझे बिना उनका नाटक नहीं समझा जा सकता, क्योंकि उनका नाट्य–साहित्य ऐतिहासिक आधार लिये हुए होता है। प्रखर कल्पना और ऐतिहासिक सत्य का समुचित और संतुलित प्रयोग उनके नाटकों में हुआ है। इस कला में अभी तक हिन्दी का कोई भी दूसरा नाटककार उनकी समता नहीं कर सका है।

प्रसाद प्रधानतः एक कवि थे ओर उसके बाद नाटककार। विश्व के महाकवियों का स्वतंत्र चिन्तन–दर्शन होता है। प्रसाद भी एक भौतिक दार्शनिक थे। उनके साहित्य में एक नितान्त नूतन दर्शन की धारा बहाई गई है; जो न तो हिन्दी के प्राचीन साहित्य में देखने को मिली और न आधुनिक साहित्य में ही। उनका दर्शन, उनके स्वतंत्र व्यक्तित्व और मौलिक चिन्तन का परिणाम है। उनके दार्शनिक का खुला रुप 'कामायनी' में प्रकट हुआ है। प्रसाद की चिन्ता–धारा उनके नाट्य–साहित्य में भी प्रवाहित हुई है। प्रसाद–साहित्य की समस्त चेतना ही एक दार्शनिक पृष्ठभूमि लिये खड़ा है। इसीलिए उनके साहित्य में दर्शन की ठोस भूमि पाई जाती है। उपनिषदों, बौध्द–दर्शन और शैव–दर्शन के गहन अध्ययन ने उनके व्यक्तित्व को गंभीर बना दिया। इसी गंभीरता की छाया उनके नाटकों में भी देखी जाती है। इसी गंभीरता के कारण उनके नाटकों में हास्य का अभाव है। प्रसाद के दर्शन का वैभव,उनके प्रत्येक नाटक में बिखरा पड़ा है।

शैव–दर्शन का प्रभाव प्रसाद के मन–मस्तिष्क पर बहुत अधिक पड़ा था। शैवागमों में 'माया' के अनेक नाम बतलाये गए हैं। उनमें नियति भी एक है। यह जीव (मनुष्य) की स्वतन्त्र बुध्दि और शक्ति का तिरस्कार किया करती है। अंग्रेजी में जिसे हम Fate (भाग्य) कहते हैं, वह यही 'नियति' है। Men proposes and god disposes वाली अंग्रेजी कहावत को चरितार्थ करने वाली यही नियति है। जीव की अभिलाषाओं का कोई अन्त नहीं है। वह अपनी सारी इच्छाओं को कार्य रुप में परिणत करना चाहता है। लेकिन नियति मानव–मन की इच्छाओं का विरोध करके कुछ दूसरा ही कार्य करा देती है। प्रसाद के समस्त नाटकों में इस नियति का बार–बार उल्लेख हुआ है। इसीलिए उनके आलोचकों ने उन्हें नियतिवादी कहा है। जीवन–संग्राम में जब उनके पात्र हारकर थक जाते हैं तब वे नियति की दुहाई देने लगते हैं। कर्म–च्युत होकर करुणा की शरण लेते हैं। अजातशत्रु के कथन से यह स्पष्ट होता है – अदृश्य तो मेरा सहारा है। नियति की डोर पकड़कर मैं निर्भय कर्मकूप मैं कूद सकता हूँ। क्योंकि मुझे विश्वास है कि जो होना है, वह तो होवेगा। फिर कायर कयों बनूँ – कर्म से विरक्त क्यों रहूँ।[2] 'राज्यश्री' का शान्तिदेव (विकटघोष) उसीकी उँगलियों पर नाच रहा है। जो रह–रहकर 'नियति' की पुकार करता है, 'अच्छा जो नियति करावे' वह जीवन को कठोर कहता है और जीवन की कठोरता ही तो नियति है, 'इसकी आवश्यकता जो न करावे।' मनुष्य की लालसाओं की कोई सीमा नहीं है। 'राज्यश्री' के ग्रहवर्मा की अंतर्वाणी चीत्कार कर उठती है कि 'मनुष्य–हृदय का स्वभाव दुर्बल है! प्रवृत्तियाँ बड़ी–बड़ी राज्य–शाक्तियों के सदृश इसे घेरे रहती हैं। अवसर मिला कि इस छोटे–से हृदय को आत्मसात कर लेने को प्रस्तुत हो जाती हैं।' जीवन की अत्यधिक प्रवृत्तियाँ नियति की कठोरता बन जाती हैं। तभी दुःखें की अधिकता हो जाती है। इसलिए प्रसाद ने अपने नाटकों में जिस दर्शन की नियोजना की है, उसमें सुख ओर दुःख दोनों को अनिवार्य रुप से ग्रहण किया गया है। यद्यपि उनके सभी नाटक सुखंत–जैसे मालूम होते हैं तथापि वे सुखन्त नहीं है। प्रसाद की सुखान्त भावना प्रायः वैराग्यपूर्ण शान्ति होती है। प्रसाद के जीवन की करुणा जिज्ञासा, जो उनके प्राणों को सदैव विलोड़ित करती रहती थी – बौध्द–इतिहास और दर्शन के मनन ने उसे और तीखा कर दिया था। उनके नाटकों में बौध्द और आर्य दर्शन का संघर्ष और समन्वय वास्तव में दुःखवाद ओर आनन्द–मार्ग का ही संघर्ष और समन्वय है, जो उनके अपने अन्तर की सबसे बड़ी समस्यम थी। इस समन्वय के प्रभाववश उनके नाटक न पूर्णतः सुखांत हैं और न दुःखान्त, उनमें सुख–दुःख जैसे एक–दूसरे को छोड़ना नहीं चाहते – सुख आता भी है, परन्तु तुरन्त ही दुःख भी अपनी झलक दिखा ही जाता है। इस प्रकार ये नाटक सुखांत अथवा दुःखांत न होकर प्रसादान्त है।'' इस तरह 'सुखा–दुःखा की आँख–मिचौनी' प्रसाद के दर्शन का मूलाधार है, जिसका दर्शन उनके प्रत्येक नाटक में होता है।

प्रसाद मूल रुप में कवि थे; इसलिए उनका काव्य–प्रेम भी उनके नाटकों में 'सौरभ–श्लथ'वासन्ती समीर' की भाँति संचरण कर रहा है। डा. नगेन्द्र ने प्रसाद के नाटकों को 'मधु से वेष्ठित' कहा है। वास्तव में उनका नाट्य–साहित्यकाव्य का वैभवपूर्ण भण्डार है। उनकी काव्य–प्रतिभा नाटकों में यत्र–सत्र बिखरी पड़ी है। उनके गीत, वस्तु–चयन, चरित्र–चित्रण, वातावरण, कथोपकथन, सारभूत प्रभाव और भाषा –सभी जगह उनकी कविता का पराग बिखरा है, जिससे उनकी नाट्य–कला काफी रंगीन हो गई है। नाटकों में काव्य–प्रेम अधिक प्रगाढ़ होने के कारण प्रसाद का नाट्य–साहित्य जहाँ एक ओर काफी साहित्यिक हो गया है वहाँ दूसरी ओर सर्वसाधारण के लिए बोझिल और दुर्बोध भी। उनकी गंभीर चिन्तना और काव्य–प्रेम की अतिशयता ने उनके नाटकों के वर्तमान शिक्षित पाठकों तक ही सीमित कर दिया है लेकिन यह प्रयास श्रम–साध्य है। प्रसाद के नाटक आज के नहीं, कल के हैं। इस देश में शिक्षित व्यक्तियों की संख्या ही कितनी है, जो उनके नाटकों को हृदयंगम कर सकें। उन्होंने जिस नाट्य–साहित्य की परम्परा को जन्म दिया, वह हमारे देश के लिए नई नहीं है। संस्कृत–नाट्य–साहित्य तो काव्यमय है। हाँ, प्रसाद के नाटकों में काव्य में रमणीयता, अनुभूति की गहनाई और कल्पना की प्रखरता जो पाई जाती है, वह अधिकांशतः गीतों के माध्यम से प्रकट हुई। उनके नाटकों में क्रमशः गीतों की संख्या बढ़ती ही गई है। 'राज्यश्री' और 'विशाख' में तो ये कुछ परिमित संख्या में दिखाई पड़ते हैं, लेकिन उनके बाद के नाटकों में, क्रमशः गीतों की संख्या बहुत अधिक बढ़ गई है। 'चन्द्रगुप्त' में लगभग सभी पात्र गाते हैं। राक्षस भी गाता है। कवि प्रसाद की काव्य–प्रियता उनके लम्बे गीतों में अभिव्यक्त हुई है। व्यावहारिक दृष्टि से ये गीत चाहे अनुपयुक्त मालूम हों, लेकिन काव्य की माधुरी और सुषमा इनमें भरी पड़ी है। उनकी कविता कल्पना के पंख लगाकर नई उड़ान भरने लगती है, जब जीवन–संग्राम

से थका–हारा कोई चरित्र अपने हृदय की मूक वेदना को प्रकट करने का प्रयत्न करने लगता है।

प्रसाद के नाटकों का पाँचवाँ मूल तत्व उनका मानव–प्रेम है। उनकी सांस्कृतिक चेतना में, विश्व–कल्याण और लोक–सेवा का भाव प्रमुख होकर आया है। उनके नाटकों की समस्या सामयिक नहीं, मानव सभ्यता और संस्कृति से सम्बन्ध रखने वाली होती है। डॉ.सत्येन्द्र ने प्रसाद के नाटकों की समीक्षा करते हुए लिखा है कि ''प्रसाद के सभी नाटकों में एक विशेषता मिलती है, वह विदग्ध–व्यग्रता है। सभी पात्रों में एक उत्तेजना व्याप्त है, एक हलचल और व्याकुलता है। प्रश्न यह होता है कि उनके पात्रों में यह 'विरह–विदग्धता' यह आकुलता और यह अशांति क्यों है? प्रसाद विश्व–शांति के इच्छुक थे। उनके नाटकों में इसीकी खोज की गई है लेकिन विश्व में शान्ति स्थापित करने के मुख्यतः दो उपाय है – हिंसा ओर अहिंसा। 'राज्यश्री' का हर्षवर्धन अपने भाई राज्यवर्द्धन और बहनोई ग्रहवर्मा की हत्या का प्रतिशोध लेने के लिए लड़ाइयाँ लड़ता है, जिसके परिणामस्वरुप बहुत बड़ी नर–हत्या होती है। राज्यश्री अपने भाई हर्ष को सावधान करती हुई कहती है – 'भाई हर्ष, यह रत्न–जटित मुकुट तुम्हें भगवान ने इसलिए नहीं दिया कि लाखों सिरों को तुम पैरों से ठुकराओ। मेरी शांति ढूँढ़कर तुमने उसे इतनी बड़ी नर–हत्या में पाया।'[3] शांति देव (विकट घोष) भी कहता है –'शान्ति को मैंने देखा है, कितने शवों में वह दिखाई पड़ी! ''शान्ति को मैंने देखा है, दरिद्रों के भीख माँगने में! मैं उस शान्ति को धिक्कारता हूँ।''[4] जिस हर्षवर्द्धन ने अपने पराक्रम से दूसरों की संपत्ति ले ली थी, शस्त्र–बल से जो ऐश्वर्य छीन लिया था, वह उचित्य पात्रों को दे देता है और अंत में कहता है – 'हम राजा होकर कंगाल बनने का अभ्यास करें।' उसके सर्वस्व–त्याग कर चीनी यात्री को यह कहना पड़ा – ''यह भारत का देव–दुर्लभ दृष्य देखकर सम्राट! मुझे विश्वास हो गया कि यही अमिताम की प्रसव–भूमि हो सकती है।''[5] प्रसाद का मनव प्रेम उनके समस्त नाटकों में मुखरित है।

यह प्रसाद के मानव–प्रेम का ही प्रसाद है कि उनके नाटक ऐतिहासिक होते हुए भी,कथानक–प्रधान न होकर चरित्र – प्रधान हैं। मानव–स्वभाव का जितना गहरा अध्ययन इनका है उतना हिन्दी के किसी भी दूसरे लेखक का नहीं है। उन्होंने पुरुष पात्रों के तीन वर्ग किये है – प्रथम, जीवन के तत्वों को सुलझाने वाले – जैसे दग्धयन, दिवाकर मित्र, प्रेमानन्द आदि; द्वितीय, जीवन–संग्राम में जूझने वाले – अजातशत्रु, विरुध्दक, शांतिदेव आदि, और तृतीय राजनीतिज्ञ–देवगुप्त आदि। इसी तरह उन्होंने स्त्रियों के भी तीन वर्ग किये हैं। 1.राजनीति की आग से खेलने वाली 2.जीवन–संग्राम में प्रेम की आहुति देने वाली 3.दुर्बल नारियाँ।

प्रसाद के नाटकों की मुल चेतना राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक है। वस्तुतः प्रसाद के नाटकों की रचना सोद्देश्य हुई। नाटकों के माध्यम से प्रसादयुगीन दासता, असंतोष एवं आदर्शहीनता के स्थान पर देश–प्रेम, राष्ट्रीय भावना, मानवता, शौर्य, आत्मसम्मान और उत्सर्ग के महत्व का प्रतिपादन करते हैं। प्रसाद के नाटक 'देश की समृध्दि के प्रतिरुप है। 'उनके मृत पात्र अतीत के निर्देशक नहीं हैं, वर्तमान के लिए भी वे संदेश देते हैं।

प्रसाद की यह दृष्टि साहित्य के सामाजिक प्रयोजन को स्पष्ट करती है – जिसके अनुसार साहित्य–रचना का उद्देश्य सामाजिक या सांस्कृतिक भी होता है। प्रसाद साहित्य के दो प्रयोजनों पर बल देते हैं। उनके अनुसार ''संसार को काव्य के दो तरफ से लाभ मिलते हैं – मनोरंजन और शिक्षा। प्रसाद का यह भी मत है कि शिक्षा का अंश 'सत्कवियों' की वाणी में ही मिलता है,यद्यपि साहित्य की सभी विधाओं में इसका समावेश रहता है, फिर भी नाटकों में यह रुप अधिक प्रखर रुप में उपलब्ध होता है। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि प्रसाद अपने बाद के निबंधों में मनोरंजन के स्थान पर आनंद शब्द प्रयुक्त करते हैं। निश्चित रुप से प्रसाद का यह निश्चित रुप से प्रसाद का यह आनंद शब्द 'मनोरंजन से अधिक महत्वपूर्ण है। प्रसाद 'शिक्षा' को स्पष्ट करते हुए लिखते है – 'कवि में क्लीव को तलवार ग्रहण करा देने की शक्ति है, वह चिरदुःखी को चिरसुखी कर सकता है। प्रसाद यह भी मानते हैं कि उन्हें (अच्छे भावों को) उत्कर्ष देना तथा दुर्वृत्तियों का दमन करना भावमयी कविता का मुख्य कार्य है।

निःसंदेह एक ओर प्रसाद यौवन और प्रेम के गायक हैं तो दूसरी ओर अपने समय के सामाजिक प्रश्नों के प्रति भी जागरुक हैं। प्रसाद के संदर्भ में यह उल्लेखनीय है कि धीरे–धीरे प्रसाद निजी जीवन के सुख–दुःख और प्रेम तथा विरह की अभिव्यक्ति में रमना कम करते जाते हैं और सामाजिक उत्तरदायित्व की पूर्ति में अधिक संलग्न होते जाते हैं। प्रसाद–युग राजनैतिक दासता की बेड़ियों से जकड़ा हुआ था। अंग्रेज भारत और भारतीय जनता का शोषण करने में ही अपनी संपूर्ण शक्ति का प्रयोग कर रहे थे। भारतवासी अधिकारों से वंचित होकर पंगु जीवन जी रहे थे। इसके अतिरिक्त सामंतशाही प्रवृत्तियाँ, जागीरदारी एवं जमीनदारी प्रवृत्तियाँ देश को निर्बल बना रही थी। इस समय तक भारतवासियों के मन–मस्तिष्क में अंग्रेजों की दासता से देश को मुक्त कराने की भावना पूर्णरुपेण समा गई थी। युगचेता साहित्यकार प्रसाद ने भी अपने उत्तरदायित्व की पूर्णता के लिए राष्ट्रीय चेतना से युक्त नाटकों की रचना की। विषय परिस्थितियों में प्रसाद एक ओर राष्ट्रीयता की भावना पर बल देते हैं, दूसरी ओर भारतीय संस्कृति के उज्वल पक्षों का उद्घाटन कर देशवासियों के सम्मुख आदर्श उपस्थित करते हैं। यहाँ प्रसाद ऐतिहासिक और सांस्कृतिक–स्रोतों से प्रेरणा ग्रहण करते हैं। प्रसादजी भारतीय संस्कृति के आख्याता हैं और इतिहास के शुभ, कल्याणकारी एवं प्रेरणात्मक रुप के अमर गायक। इतिहास के समावेश से प्रसाद अपने उद्देश्य में सफलीभूत हुए हैं। वस्तुतः प्रसादजी ने इतिहास को मनुष्य की जय–यात्रा के रुप में देखा है। वह हमें बताता है कि मनुष्य अपनी जय–यात्रा में कितनी बार चढ़ा है, कितनी बार गिरा है, उसने कितने बार निराशा की लंबी साँस खींची है और सुस्ताकर फिर आगे बढ़ा है। उसके क्षत–विक्षित लहूलूहान चरणों ने हार नहीं मानी है, बाधाओं के काँटों को रौंदता हुआ, परजय की थकान की उपेक्षा करता हुआ, मृत्यु की चुनौती को स्वीकार करता हुआ आगे बढ़ा है। पशुता ने रह–रहकर सिर उठाया है। 'महापुरुषों' की अमृत वाणी ने उसमे नवजीवन का संचार किया है, महीयसी महिलाओं ने उसमें नव शक्ति संचारित की है, महान कर्मयोगी आए हैं और कर्मजीवन और त्यागमय चरित्र से प्रकाश बिखेरा है। मनुष्य थका है, पर रुका नहीं है। वह बढ़ता ही जा रहा है। स्पष्ट होता है कि प्रसाद ने राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रेत चरित्रों को नाटकों में स्थान दिया है, साथ ही ऐसे सार्वकालिक और सार्वभौमिक सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना पर बल दिया है – जो किसी भी जाति, समाज, राष्ट्र एवं अंतर्राष्ट्रीय स्थिति के कल्याण में सहायक होते हैं। प्रसाद के नाटकों में प्रतिपादित सांस्कृतिक मूल्य, भारतीय संस्कृति की अमूल्य धरोहर हैं। सत्य, अहिंसा, तप, त्याग आदि उदार तत्व इनके मूल में निहित हैं। इसी महान और आदर्श भारतीय संस्कृति के आलोक में प्रसाद आध्यात्मिकता पर बल देते हैं, कर्मवाद की प्रतिष्ठा करते हैं, अनेकता में एकता का समर्थन करते हैं, लोकमंगल की भावना का प्रसार करते हैं, सत्य–अहिंसा को श्रेष्ठ मानते हैं।

राष्ट्रीय चेतना एवं सांस्कृतिक चेतना पृथक–पृथक नहीं हैं। कारण यह है कि राष्ट्र और संस्कृति भिन्न नहीं है। किसी भी राष्ट्र की

संस्कृति को राष्ट्रीय संस्कृति कहा जाता है। प्रसाद नारी–हृदय के सूक्ष्म चित्रकार थे। इसीलिए उनके नाटकों में उसके दोनों पक्षों के प्रभावोत्पादक चित्र मिल जाते हैं। एक, वह रुप जहाँ उसमें वैभव, वासना, विलास, कुटिलता और कृरता आदि भाव उभरे हैं दूसरे, जहाँ उसमें करुणा, विनय, प्रेम, सहानुभूति, उदारता, आत्मसमर्पण, क्षमा, शीलता, वात्सल्य, उत्सर्ग, नम्रता आदि गुण मिलते हैं। इस प्रकार पहली श्रेणी में ऐसे नारी पात्र आते हैं जो स्त्रियोचित लज्जा एवं संकोच छोड़ कर पुरुष के समानता का अधिकार चाहते हैं। वस्तुतः उनकी प्रभुत्व–कामना एवं महत्वकाँक्षओं की कोई सीमा नहीं है। इसलिए ये सदा किसी–न–किसी षड़यन्त्र या दुर्राभिसन्धि में व्यस्त रहते हैं। परिणाम स्वरुप अधिकाँश घटनाओं का सूत्र उनके हाथ में है। इस तरह यहाँ नारी पुरष की प्रतिद्वन्द्विनी के रुप में प्रकट हुई है जो अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सभी उचित–अनुचित साधनों को अपनाने के लिए उद्यत रहती है। 'अजातशत्रु' की छलना का व्यक्तित्व छलनामय है जो कोमल हृदय वासवी से ईर्ष्या एवं द्वेष के कारण पति, पुत्र एवं राज्य पर स्वशासन चाहती है। वासवी को यह संकीर्ण स्वभाव बुरा लगता है।

'यह मैं क्या देख रही हूँ, छलना! यह गृह–विद्रोह की आग तू क्यों जलाना चाहती है? राजपरिवार में क्या सुख अपेक्षित नहीं।6 छलना के प्रतिक्रियावश किए गए लाड़–दुलार से अजातशत्रु उध्दत बना, फलस्वरुप बिम्बसार जैसे उदार एवं वात्सल्यपूर्णा पिता को राजसिंहासन छोड़ कर आश्रम का आश्रय लेना पड़ा, स्नेहमयी वासवी तथा समर्पणशील पद्मावती को अपमान सहनाा पड़ा। छलना द्वारा प्रज्वलित प्रतिहिंसा की आग में सारे परिवार की सुख–शान्ति समाप्त हो गई। उदयन और उसकी रानियों का ईर्ष्या–डाह के मूल में मागंधी की प्रतिशोध भावना कार्य कर रही है। राजरानी होने पर भी उसकी उपेक्षा एवं अवहेलना की गई। वह उदयन को दिखला देना चाहती है कि 'स्त्रियाँ क्या कर सकती हैं। अपनी ध्येय–प्रप्ति के लिए उसने वीणा में साँप डाल कर पद्मावती को नीचा दिखाने का षड़यंत्र किया, वैश्या बनी, समुद्रदत्त की हत्या की, वीर विरुध्दक को वश में रखने का प्रयत्न किया। अतःस्पष्ट है कि नाटक की समस्त घटनाओं के मूल में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप नारी–पात्र कार्य कर रहे हैं।

'स्कंदगुप्त' भी इसका अपवाद नहीं है। वहाँ गृह–कलह का आधार है युवराज पद जिसे अनन्तदेवी पुरगुभ्त को देना चाहती है। अनन्तदेवी के प्रभुत्वपूर्ण व्यक्तित्व तथा प्रलोभनों की लपेट में नाटक के सभी प्रमुख पात्र–भाटार्क, विजया,प्रपंचबुध्दि, शर्वनाथ आदि आ जाते हैं। वह इन सबके कार्य–व्यापार की सूत्रधार है। भटार्क के शब्दों में –

'एक दुर्भेद्य नारी हृदय में विश्व–प्रहेलिका का रहस्य बीज है। आह, कितनी साहसशील स्त्री है। देखूँ, गुप्त साम्राज्य की कुन्जी किधर घुमाती है।'[7] इतना ही नहीं, भटार्क, शर्वनाग तथा कहीं–कहीं विजया अनन्तदेवी के संकेत पर कठपुतली की तरह कार्य करते हैं। सारंश यह कि अधिकार–लिप्सा और सत्ता के मोहजाल में पड़ कर ये नारी के सहज गुण कार्य भूल जाती हैं। आकाँक्षाओं के तीव्र मदिर प्रवाह में स्त्रियोचित लज्जा, त्याग और उत्सर्ग बह जाते हैं। नारी के उक्त निष्ठुर एवं कठोर रुप की पृष्ठभूमि कोमल एवं सुकुमार व्यक्तित्व उभरा है। यहाँ वैभव एवं विलास के लिये कुटिलता तथा कृरता नहीं मिलती, न पद याा गौरव–लिप्सा के लिये कुचक्र। यहाँ तो नारीत्व के महिमामंडित गुण मूर्तिमन्त हुए हैं। ये पात्र शान्त, सरल एवं भावुक हैं जिन्हें राजनैतिक दाँव–पेंच या छल–कपट से कोई सरोकार नहीं। इनके लिये जीवन ओर जगत में एक राग है, उसी की तान में ये बेसुध रहते हैं। इसीलिए प्रत्येक नाटक में ऐसी पात्री मिल जाती है जिसका जीवन संगीत है। कल्पना में संजोये भाव शब्द पाकर गीतों में प्रस्फुटित हुए हैं। कितने ही युध्द या विद्रोह होते रहे, उनके कोलाहल से दूर ये अपने हृदयलोक की भाव–लहरियों में तल्लीन रहती हैं।

इसी परम्परा में ऐसे नारी–पात्रों का परिचय मिला है जो अनुभवी, उदार एवं कर्तव्यनिष्ठ हैं। उनमें कोरी भावुकता नहीं है। जीवन का सूक्ष्म पर्यवेक्षण करने का कारण उन्हें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से राजनैतिक उथल–पुथल में भी भाग लेना पड़ा है। यह वे केवल अन्तःकरण की प्रेरणा एवं आदर्शपालन के लिये करती हैं, राजलित्सा के लिये नहीं। 'स्कन्दगुप्त' की कमला इसका सुन्दर उदाहरण है जिसे भाटार्क को अपना पुत्र कहते लज्जा आती है। उसके नीच एवं कृतघ्न आचरण को देखकर ही वह स्कन्दगुप्त को प्रेरित करती है। जो अपने कार्यों को ईश्वर का कर्म समझकर करता है, वही ईश्वर का अवतार है। रमा ओर जयमाला भी इसी श्रेणी के पात्र हैं। 'अजातशत्रु' की वासवी तथा 'चन्द्रगुप्त' की अलका का व्यक्तित्व–निर्माण इसी ध्येय को रख कर किया गया है। जीवन का पूर्वाद्ध बिता देने के कारण उन पात्रियों का दृष्टिकोण व्यावहारिक अधिक है। कर्त्तव्य भावना तथा महान उद्देश्य को महत्व देते हुये ये पुरुष के लिए प्रेरणा–स्रेत बनी हैं।

***ग्रंथ सूची*** :


1. राज्यश्री – जयशंकर प्रसाद – पृं. सं. 13
2. स्कन्दगुप्त – जयशंकर प्रसाद – पृं. सं. 21
3. राज्यश्री – जयशंकर प्रसाद – पृं. सं. 07
4. राज्यश्री – जयशंकर प्रसाद – पृं. सं. 18
5. राज्यश्री – जयशंकर प्रसाद – पृं. सं. 21
6. आजातशत्रु – जयशंकर प्रसाद – पृं. सं. 27
7. स्कन्दगुप्त – जयशंकर प्रसाद – पृं. सं. 34

***टी, श्रीनिवासुलु***
प्राचार्य, यस, वी, महाविद्यालय, अनंसपुरमु, आन्ध्रप्रदेश.

# Publish Research Article
# International Level Multidisciplinary Research Journal
# For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

## Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

## Associated and Indexed,USA

- Google Scholar
- EBSCO
- DOAJ
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Indian Streams Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net